IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में आधुनिक परिवेश : एक अध्ययन

डॉ. तृप्ति उकास
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी
प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस
शासकीय महाकोशल महाविद्यालय, जबलपुर, म. प्र.

शोधसार

यह तो सर्वविदित है, कि साहित्य समाज का दर्पण होता है और एक साहित्यकार के लिए भावनाओं का संप्रेषण ही बड़ी चुनौती स्वरूप होता है। वह जो कुछ भी अभिव्यक्त करता है, वो उसके वातावरण को चित्रित करने वाला होता है। एक उत्कृष्ट लेखक एक सक्षम अभिव्यक्ति के लिए अपने संपूर्ण भाव-शस्त्र को तत्कालीन परिवेश से चयनित करता है, जिसके मध्य वो रह रहा होता है। जो परिवेश उसके हृदय को द्रवीभूत कर देता है, उसकी भावनाओं के सागर को उद्वेलित कर देता है, उसकी वैचारिक मेधा को आंदोलित कर देता है। इस दृष्टि से यदि देखें तो कोई भी विधा की जीवंतता युग की माँग के अनुसार प्रतिदिन परिवर्तित होती रहती है। हर युग नवीन संदर्भों के साथ समाज के समक्ष नवीन चुनौतियों के स्वरूप को उजागर करने वाला होता है, जिसे एक सफल साहित्यकार अपनी भावनाओं का आधार प्रदान कर समाधान की ओर लेकर जाने का प्रयास करता है। अपनी लेखनी के शस्त्र से पल-पल हर आयाम को सौंदर्य प्रदान करने का प्रयास उस विधा को हर छोर से नवीनता और स्वर्णिमता प्रदान करता है।

इन समस्त विशिष्टताओं को धारण करने वाले साहित्यकारों के मध्य महिला लेखिका के रूप में मन्नू भंडारी का व्यक्तित्व एक रवि किरण जैसा है, जिसका छोर-छोर ज्ञान के प्रकाश से प्रस्फुटित होता हुआ दिखायी देता है। उनके साहित्य में पग-पग पर आधुनिक संदर्भ विद्यमान हैं; जो कुछ भी नवीन उद्भावनाएँ समाज के समक्ष प्रस्तुत हुई हैं, उन्हें उन्होंने अपने साहित्य में उतारने का परिपूर्ण प्रयास किया है। उन्होंने अपने कहानी उपन्यास आदि जिस विधा के द्वारा भी भावनाओं की अभिव्यक्ति को अवतरित किया उन सभी में आधुनिकता का पुट देखते ही बनता है। उनका सम्पूर्ण कथा साहित्य यथार्थवादी शिल्प से मंडित है। उन्होंने समसामयिक सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों को अपने साहित्य के द्वारा समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है, जो समूचे काल को प्रभावित करने की प्रेरक शक्ति से अनुप्राणित है। प्रस्तुत शोध पत्र मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में व्याप्त आधुनिक परिवेश के अध्ययन को प्रस्तुत करता है।

शब्द कुंजी – यथार्थवाद, मनोवैज्ञानिकता, मार्क्सवादी विचारधारा, नई कहानी, मध्यमवर्गीय जीवन।

परिचय

साहित्यकार अपने निजी स्तर पर अपने समसामयिक परिवेश से गुजरते हुए रचनाधर्मिता का निर्वाह करता है। उसका व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों में उसका प्रवेश प्रतिबिंबित होता है। वह अपने साथ सामाजिक विषमताओं, मानवीय संवेदनाओं का संपूर्ण संसार लिप्त किये रहता है और इस लेखन को ही यथार्थ लेखन कहते हैं। इसी को परिवेश की सत्य अभिव्यक्ति कहते हैं। परिवेश को भोगने की प्रक्रिया हर लेखक की अपनी एक अलग दृष्टि से युक्त होती है, जो व्यक्ति का निर्माण और विघटन दोनों को करने में सक्षम होती है। प्रसिद्ध साहित्यकार मन्नू भंडारी की लेखनी उनके व्यक्तित्त्व और उनके कृतित्त्व दोनों का प्रतिबिंब है। उनका व्यक्तित्त्व जिस परिवेश में पला, जिसे उन्होंने अनुभूत किया, जिससे वह आंदोलित हुईं उसके संदर्भ उनके कृतित्त्व में देखने के लिए मिलते हैं। अतः यह अतिशयोक्ति नहीं है कि, उनका कथा साहित्य आधुनिक परिवेश का प्रतिबिम्ब है। 3 अप्रैल सन् 1931 में मध्यप्रदेश के भानुपुरा में जन्मी मन्नू भंडारी हिंदी पारिभाषिक शब्दकोश के रचयिता सुखसम्पत राय की छोटी पुत्री के रूप में जानी जाती हैं। जिन्हें लेखन का कौशल एक पैतृक संपत्ति के रूप में अपने पिता से प्राप्त हुआ। पिता की कीर्ति और गौरवपूर्ण कृतित्त्व के आश्रय में उन्होंने अपने बचपन को व्यतीत किया। पितृ व्यक्तित्त्व से प्रभावित होने वाली मन्नू भण्डारी पूर्णरूपेण अपने पिता की छवि को धारण करने वाली थीं।

श्रीमती मन्नू भण्डारी के व्यक्तित्त्व पर अपने पिताजी के व्यक्तित्त्व का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा है। मन्नू जी ने अपना प्रथम कहानी संग्रह "मैं हार गयी पिताजी को समर्पित करते हुए लिखा है "जिन्होंने मेरी किसी भी इच्छा पर कभी अंकुश नहीं लगाया- उन पूज्य पिताजी को समर्पित"।

मन्नू भंडारी का कथा साहित्य और सामाजिक यथार्थवादी धारा

आधुनिक परिवेश की बात करें तो समाज की यथार्थ भावभूमि को अपने लेखन में उतारना, उस परिवेश को संपूर्ण संवेदना के साथ अभिव्यक्त करना एक कलाकार के लिए किसी कसौटी से कम नहीं। मन्नू भंडारी इस कसौटी पर खरी उतरती है। उन्होंने समाज की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण संस्था परिवार के यथार्थ को अपने लेखन के द्वारा जीवंतता प्रदान की है। यदि परिवार का आधार हटता है तो समाज रूपी विशाल भवन स्वतः ही धराशायी हो जाता है। बच्चा अपने परिवार में रहकर पालन पोषण, शिक्षा-दीक्षा, संस्कार आदि सब कुछ से मंडित होता है और एक परिवार का संगठन ही समाज को निर्मित करता है। अतः आधुनिक परिवेश की झाँकी यदि कहीं देखने को मिलती है, तो फिर पारिवारिक परिस्थितियों के मध्य ही उन्हें देखा जा सकता है।

प्राचीन काल में हमारा समाज संयुक्त परिवार के रूप में जाना जाता था और हर एक व्यक्ति मिलजुलकर रहता था लेकिन आधुनिक परिवेश बदला है, मान्यताएँ बदली हैं, विचार बदले हैं; फलस्वरूप जो परिवार कभी संयुक्त हुआ करते थे आज उनकी परिभाषाएँ बदल गयी हैं। वो एकाकी होने लगे हैं और उनका स्वरूप निरंतर लघु होता चला जा रहा है। ये जो लघु परिवार हैं; इसमें पति पत्नी और उनके बच्चे होते हैं, भाई-बहन अन्य कोई रिश्तेदार नहीं आते। व्यक्ति और समाज के परस्पर संबंधों को जोड़ने वाले पारिवारिक संबंधों में दरार पड़ने लगी है। आधुनिक परिवेश आमूलचूल परिवर्तित हो गया है। परिवार के मध्य पुरुष का वह वर्चस्व जो कभी पहले हुआ करता था, आज संकुचित हो गया है। स्त्री-पुरुषों के पति-पत्नी के रूप में जीवन यापन करने के लिए धार्मिक, सामाजिक तथा कानूनी सम्मति प्रदान करने वाली संस्था ही विवाह है। भारतीय समाज में विवाह एक संस्था है, मात्र समझौता नहीं। पहले माता-पिता जीवनसाथी का चुनाव करते थे और दो परिवार एक घनिष्ठ प्रेममयी संबंध में बद्ध हो जाते थे; लेकिन आज औद्योगिक क्रांति के मध्य, शिक्षा के बदलते स्वरूप के मध्य, पाश्चात्य संस्कृति की छाया से प्रभावित होने के कारण वैवाहिक मूल्य नवीन रूपों में स्थापित हुए हैं। आज मान्यता प्रेम विवाह को दी जाती है, आज मान्यता मैत्री सम्बन्ध के रूप में एक समझौते को दी जाती है और यही नहीं थोड़ी सी भी वैचारिक विषमताएँ तलाक की मान्यता को विकसित कर रही हैं। फलतः ये जो विवाह संस्थाएँ परिवर्तित हुई हैं, इनका विरोध परिवर्तित दृष्टिकोण का परिचायक है। भारती जी

कहते हैं कि, "अगर यह विवाह संस्था हट जाए तो कितना अच्छा हो, पुरुष और नारी में मित्रता हो, बौद्धिक मित्रता और दिली हमदर्दी, ये नहीं की आदमी औरत को अपनी वासना बुझाने का प्याला समझे और औरत आदमी को मालिक"।[1]

श्रीमती मन्नू भण्डारी ने आधुनिक परिवेश में व्याप्त पति-पत्नी की मानसिकता को वैयक्तिक चेतना के आधार पर अनुप्राणित किया है। उन्होंने नारी-पुरुष के जीवन का चित्रण नये दृष्टिकोणों से किया है। उन्होंने एक दो कहानियों को छोड़ कर अन्य समस्त रचनाओं में विवाह संस्था का विरोध कहीं नहीं किया है। "उनकी कहानियों में टूटते हुए दांपत्य जीवन के पक्ष, अर्थात् नारी की मानसिकता का चित्रण अधिक है जो स्वाभाविक है। उनके पात्र जिस तरह के अन्तर्द्वन्द्व से गुज़रते हैं, वे अन्तर्द्वन्द्व आज भी लगभग ज्यों के त्यों बने हुए हैं। इससे भी आगे चल कर यह कहा जा सकता है, कि ज्यों-ज्यों नारी शिक्षित होती जा रही है, अर्थार्जन के अनेकानेक क्षेत्रों में प्रवेश करती जा रही है, अपने दायित्वों के निर्वाह में सफल होती जा रही है, त्यों – त्यों उसके दांपत्य जीवन का विग्रह तीव्रतर होता जा रहा है"।[2]

आधुनिक परिवेश का यथार्थ यह है कि, मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवी परिवारों में बिखराव आम समस्या का रूप लेता जा रहा है। ज़रा-ज़रा से वैचारिक मतभेद परिवारों का विघटन कर देते हैं। किसी में किसी को समझने की धीरता नहीं है। परिवार का प्रत्येक सदस्य तत्काल अधीर होता है। जिसमें पति-पत्नी के संबंध क्रोध, अविश्वास, नासमझी, हड़बड़ाहट आदि से प्रभावित होकर विघटन की ओर अग्रसर हो जाते हैं; जिसे मन्नू भंडारी ने अपनी लेखनी के द्वारा बड़े स्वाभाविक ढंग से अभिव्यक्त किया है। पति और पत्नी दोनों अपनी स्वतंत्रता को बनाये रखने की हड़बड़ी में एक-दूसरे की स्वतंत्रता को बाधित करते हैं। ऐसे में दोनों का आपसी जीवन-निर्वाह कठिन हो जाता है। लेखिका ने "आपकी बंटी" में अपना ध्यान इसी समस्या पर केन्द्रित किया है ।

अजय-शकुन के जीवन में वैवाहिक जीवन की पुरानी मिथ टूट गयी है। पति के आश्रय में रहने की रीति मिट गयी। बच्चों के माता-पिता के साथ रहने की प्रथा भी खतम हुई। अन्त में बंटी एक प्रोब्लमेटिक बच्चा बन जाता है। मन्नू जी के शब्दों में "इन संबंधों के लिए कम जिम्मेदार और सब ओर से बेगुनाह बंटी ही इस त्रासदी के त्रास को सब से अधिक भोगता है ।.... शकुन-अजय के आपसी संबंधों में बंटी चाहे कितना ही फालतू और अवांछनीय हो गया हो, परन्तु मेरी दृष्टि को सब से अधिक उसी ने आकर्षित किया"।[3]

'एखाने आकाश नादूं' कहानी के माध्यम से मन्नू भंडारी संयुक्त परिवार के विघटन के मुख्य कारण 'पारिवारिक तानाकशी' को बड़े स्वाभाविक ढंग से प्रस्तुत करती हैं; जहाँ जेठानी संयुक्त परिवार की मर्यादाओं के बीच टूटती बिखरती दिखाई देती है। बात-बात पर वह झगड़ती है और कोसती रहती है। अपनी देवरानी से वह ईर्ष्या करती है और व्यंग्य बाण छोड देती है – "कलकत्ता के सैर-सपाटे छोड़ कर कौन इस घनचक्कर में फंसेगा? यह तो हमारे ही छोटे भाग है, जो रात-दिन कोल्हू के बैल की तरह पिसे रहते हैं" । आगे कहती है – "तुम्हीं करो नाव के सैर-सपाटे । हमारी किस्मत में तो रसोई के ही सैर-सपाटे लिखे हैं"। फिर व्यंग्य कसने लगती है "रहने दो, बाबा। दो दिन आराम करके आदत नहीं बिगाड़नी है। तुम बाहर हवा में बैठो। तुम्हें तो आदत भी न होगी"।[4]

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में आधुनिक परिवेश में व्याप्त दाम्पत्य संबंधों का ह्रास देखने के लिए मिलता है-'रानी माँ का चबूतरा' की गुलाबी अपने पति के शराबी होने से मज़बूर है। एक ओर वह हड्डी तोड़ कर सारा दिन काम करती है और दूसरी ओर पति घर में बैठ कर दारू पीता है। ये विषम परिस्थितियाँ उसके जीवन में खीज, क्रोध, असमंजस, ऊब, असहनशीलता और मायूसी भर देती हैं। वास्तविकता यह है कि, गुलाबी उतनी सहनशील नहीं है और साहसी भी नहीं है। एक दिन वह झाड़ू मार

[1] गुनाहों का देवता – धर्मवीर भारती

[2] कथाकार मन्नूभंडारी – अनीता राजूरकर, आवरण पृष्ठ

[3] जन्मपत्री : बंटी की – आपका बंटी- मन्नू भंडारी, पृष्ठ – 07.

[4] एखाने आकाश नादूं : श्रेष्ठ कहानियाँ- मन्नू भण्डारी

कर पति को घर से भगा देती है। फिर भी गुलाबी के मन में अपने पति के प्रति घृणा और आक्रोश भरे रहते हैं। कभी-कभी अपने मन का गुस्सा बच्चों पर उतार देती है और खूब अपशब्द कह देती है "कोस रही हूँ उस दारुखोर को जो मेरी जान को ये कीड़े-मकोडे छोड़ गया"।[5] पड़ोसवालों से, गाँववालों से, अपने पति से भी पीड़ा सह कर गुलाबी का जीवन बिखर गया है। इस अव्यवस्थित परिस्थितियों से उसके पारिवारिक जीवन का ह्रास हो गया है।

आधुनिक परिवेश और मनोवैज्ञानिकता

आधुनिक युग आधुनिक परिवेश का प्रतिबिंब है। जो निरंतर परिवर्तनशील है। पग-पग पर नवीन आयाम दृष्टिगोचर होते हैं। आज की नारी की मानसिकता प्राचीनकालीन नारी हृदय से बिल्कुल विपरीत है। आज नारी केवल पत्नी, माता आदि संबंधों के द्वारा ही अपना परिचय नहीं देती वह अपने आप को राष्ट्र या समाज के उत्तरदायी नागरिक के रूप में उपस्थित करती है। आज नारी का क्षेत्र घर और बाहर दोनों हो गया है। नारी स्वावलंबी हो गयी है और अर्थ-व्यवस्था उसके हाथ में आने से निर्णय लेने की क्षमता उसमें आ गयी है। आज समस्त मनोवैज्ञानिक संदर्भ बदलने लगे हैं। नारी मनोवैज्ञानिकता की दृष्टि से यदि देखा जाए तो सामाजिक जागरण, नारी आंदोलन, पाश्चात्य प्रभाव, स्वाधीनता की भावना, परंपरागत नवीन मूल्य, विकास का आधार शिक्षा आदि समस्त संदर्भों की धरातल नारी हृदय की मानसिकता पूर्णरूपेण परिवर्तित हो गई है जो आधुनिक परिवेश में परिलक्षित होती है। जिस हृदयगत संवेदनाओं को मन्नू भंडारी ने अपने कथासाहित्य के द्वारा अभिव्यक्त किया है। उन्होंने इस बात को सिद्ध किया है की वर्तमान संदर्भ में नारी मनोवैज्ञानिकता रमणी की नहीं, मात्र एक खिलौने की नहीं बल्कि उससे कहीं अधिक है। "आज नारी को सतीत्त्व और देवीत्त्व के कटघरे से निकाल कर उसे एक संपूर्ण मानवीय इकाई के रूप में देखने और समझने का प्रयत्न हो रहा है। अब वह केवल खिलौना नहीं, केवल रमणी भी नहीं। मात्र संगिनी भी नहीं, अधिकाधिक "व्यक्ति होती जा रही है"।[6]

मन्नू जी ने महिला लेखिका होने के नाते नारी मनोवैज्ञानिकता को सूक्ष्मता से जाना है। उन्होंने अपनी नारी जाति का चित्रण और निरूपण नारी के दृष्टिकोण से किया है। उन्होंने साहित्य में युगों पुरानी कथाओं में निहित रूढ़ियों के मलबे के नीचे से नारी के मौलिक व्यक्तित्व का अन्वेषण उसके चरित्र का यथार्थ निरूपण और निस्संग विश्लेषण किया है।

मन्नू जी मिरांडा हाउस में काम करती थीं। इसलिए रोज़ युवा पीढ़ी के संपर्क में आने के अतिरिक्त उनको तरुण युवतियों की आकांक्षाओं, स्वप्नों और बदलती मान्यताओं के विस्तृत आयामों को देखने का अवसर मिला है। उन्होंने एक साक्षात्कार के दौरान कहा है "मैं नारी को उसकी घुटन से मुक्त करना चाहती हूँ। उसमें बोल्डनेस देखना चाहती हूँ .... और देखिये बोल्डनेस हमेशा दृष्टि में होनी चाहिए, वर्णन में नहीं। मैंने अपनी कहानियों में इसे इसी रूप में चित्रित किया है"।[7]

मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में प्रेम और सेक्स

श्रीमती भन्नू भण्डारी आधुनिकबोध से संपन्न कथा लेखिका हैं। उन्होंने प्रेम, विवाह, स्त्री-पुरुष के संबंधों की पृष्ठभूमि में अनेक कहानियाँ और उपन्यास लिखे हैं। आज के सामाजिक परिवर्तनों को उन्होंने महसूस किया है। नर-नारियों ने पुरानी नैतिक धारणाओं को नकार कर यौन-शुचिता को त्याग दिया है। उन्होंने काम को देहधर्म या नैसर्गिक प्रक्रिया स्वीकार कर आधुनिकबोध का परिचय दिया है। उन्होंने यह महसूस किया कि सारे मूल्यों के नाम पर लगाये बन्धन और वर्जनायें शून्य या निरर्थक हैं। मन्नू जी ने प्रेम के इस बदलते स्वरूप और नैतिक मानदंडों को अपने कथा साहित्य में चित्रित किया है।

आधुनिक परिवेश में जिस नैतिकता का विघटन चारों ओर दिखाई देता है, उसे मन्नू भंडारी ने अपने कथा साहित्य में बड़ी ही सूक्ष्मता और स्वाभाविकता के साथ अवतरित किया है। नैतिकता की निरर्थकता को स्थापित करनेवाली मन्नू जी की कहानियाँ काफी सशक्त हैं। "ईसा के घर इन्सान', 'यही सच है', 'ऊँचाई' आदि कहानियाँ इसके स्पष्ट उदाहरण हैं।

श्रीमती मन्नू भण्डारी ने प्रेम और सेक्स को दैहिक और मानव की प्राकृतिक ज़रूरत साबित किया है। उन्होंने प्रेम को वैवाहिक और विवाहेत्तर दोनों संबंधों में चित्रित किया है।

---

[5] रानी माँ का चबूतरा - मन्नू भण्डारी : श्रेष्ठ कहानियाँ-मन्नू भण्डारी

[6] नेमिचन्द्र जैन अधूरे साक्षात्कार

[7] मन्नू भण्डारी एक साक्षात्कार - मन्नू भण्डारी का श्रेष्ठ सर्जनात्मक साहित्य मन्नू जी से- डा. बंशीधर।

आज समाज के स्थापित पुराने मूल्यों में परिवर्तन आने लगा है। पुरुष अथवा स्त्री के लिए चाहे वह ब्याहता हो या अनब्याही हो, यह ज़रूरी नहीं है कि वह प्रेम संबंध को बनाये रखने के लिए अपनी उम्र और भावनायें सब कुछ समर्पित कर दे। यह भी ज़रूरी नहीं है, कि वह तन और मन से एक ही व्यक्ति के प्रति सचेष्ट रहे। उसका तन और मन अपनी मर्जी का अधिकारी है। उसके लिए कोई कायिक या मानसिक रुकावट नहीं है। निषेधों और संकीर्णता में कैद वह प्रेम संबंधों का युग अब बीतता जा रहा है।

इस प्रकार मन्नू भंडारी ने अपने कथासाहित्य के माध्यम से आधुनिक परिवेश के बदलते विभिन्न संदर्भों को अभिव्यक्ति किया है उन्होंने नारी जीवन में व्याप्त प्रेम की असफलता प्रणय के द्वंद्व परंपरा और रूढ़ियों के निषेध जीर्ण शीर्ण मूल्यों की स्थापना में उत्पन्न टकराव पति धर्म से अतिरिक्त प्रेम की अभिव्यंजना इस सन आदि विभिन्न नवीन संदर्भों को अपने कथा साहित्य में उजागर किया है और यह सिद्ध किया है कि आधुनिक परिवेश में मनुष्य की सोच मानसिकता निरंतर परिवर्तित हो रही है; अब वह पुरानी संस्कृति और सभ्यता में जीने वाला मात्र भारतीय संस्कृति का संपोषक नहीं है; अब वह पाश्चात्य संस्कृति के साथ साथ आधुनिकीकरण में मुक्त आकाश में खुले पंखों के साथ विचरण करना चाहता है, जिसमें न केवल पुरुष वर्ग आगे है वरन स्त्री वर्ग भी उतना ही आगे है। वह भी नवीन संदर्भों और नवीन मूल्यों के साथ अपने प्रेम की प्राप्ति करने के लिये निरंतर खुले गगन में मुक्त होकर विचरण करने की आकांक्षा रखती है।

निष्कर्ष

आधुनिक युग में नारी ने अपने आन्तरिक और बाह्य व्यक्तित्त्व को पहचानने की कोशिश की है । महिला कथा लेखिका के दृष्टिकोण से श्रीमती भन्नू भण्डारी ने आधुनिक परिवेश में वर्तमान नारी का मानसिक विश्लेषण किया है और उसके हृदय की धड़कनों को सही तरीके से वाणी दी है। आधुनिक बोध से संपन्न लेखिका होने के नाते मन्नू जी ने अपनी रचनाओं में प्रेम और सेक्स को रुढ़िमुक्त यथार्थ दृष्टि से अभिव्यक्ति दी है। आज के समाज में प्रेम और सेक्स के बदलते स्वरूप और नैतिक मापदण्डों को अंकित करने में वे सफल हुई हैं। वास्तव में उनका कथा साहित्य आधुनिक परिवेश के नवीन मूल्यों से मंडित है, उसमें नवीन संदर्भ व्याप्त हैं और नारी जीवन में जो परिवर्तन पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से आया है, वो स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। उन्होंने अपने कथासाहित्य के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि, वर्तमान नारी अपनी भावनाओं को अपने अनुसार अभिव्यक्ति प्रदान करने में अग्रणी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

हिन्दी कहानी एक अंतरंग परिचय - उपेन्द्रनाथ अशक, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, 1967.

हिन्दी कहानी सातवाँ दशक - प्रहलाद अग्रवाल, दि मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया, 1977.

हिन्दी कहानी: अपनी ज़बानी - इन्द्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, 1968.

हिन्दी कथा साहित्य विविध आयाम - डा. महेन्द्र भटनागर, आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली, 1988.

हिन्दी उपन्यासों में नारी - डा. शैल रस्तोगी, विभू प्रकाशन साहिदाबाद, 1977.

मन्नू भण्डारी का श्रेष्ठ सर्जनात्मक साहित्य - डा. बंशीधर एवं डा. राजेन्द्र मिश्र, नटराज पब्लिशिंग हाऊस हरियाणा, 1983.

मन्नू भण्डारी का कथा साहित्य - गुलाब राव हाडे, 1987.